मक्सिम गोर्की

कामो

एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी



कामो

एक जाँबाज़ इंकलाबी मज़दूर की कहानी

मक्सिम गोर्की

राहुल फ़ाउण्डेशन
लखनऊ

1905 के नवम्बर-दिसम्बर के महीने में मैं मोखोवाया मार्ग और वोज्दविजेन्का के नुक्कड़ पर स्थित इमारत के फ्लैट में रहता था। कुछ ही दिन पहले तक अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का कार्यालय भी इसी इमारत में था। मेरे साथ उस समय बारह हथियारबन्द जॉर्जियाइयों की एक टुकड़ी रहती थी। समिति के मातहत बोल्शेविक साथियों के एक दल को लियोनिद क्रासीन ने संगठित किया था। यह समिति उनकी मदद से मास्को के मज़दूरों के क्रान्तिकारी कार्यकलापों को निर्देशित व संचालित करने की चेष्टा कर रही थी। इन साथियों की टुकड़ी विभिन्न जिलों के बीच संचार व्यवस्था को बनाये रखने की कोशिश करती थी तथा सम्मेलनों के दौरान मेरे कमरे की रखवाली भी करती थी। बहुत बार इस टुकड़ी को ''यमदूतों'' ('ब्लैक हन्ड्रेड्स' नाम का संगठन जो क्रान्ति का विरोधी था) के खिलाफ लड़ने के लिए भी जाना पड़ता था। ऐसे ही एक अवसर पर जबकि लगभग एक हजार यमदूतों की भीड़ ने टेकनिकल कॉलेज पर, जहाँ उस दरिन्दे मिखालचुक द्वारा मार डाले गये साथी बाउमान का शव रखा था, धावा बोल दिया था तो जॉर्जिया के नौजवान मज़दूरों की हथियारों से अच्छी तरह लैस इस टुकड़ी ने उस भीड़ को मार भगाया था।

टुकड़ी के साथी दिनभर के काम और ख़तरों से थककर देर गये रात घर लौटते थे। फिर फ़र्श पर लेटे-लेटे वे एक-दूसरे को दिन भर के अपने अनुभव सुनाते थे। वे सबके सब 18 और 22 वर्ष तक की उम्र के नौजवान थे। उनके कमाण्डर साथी अराबिद्जे थे। साथी अराबिद्जे की आयु तीस के क़रीब हो रही थी। वह बहुत कर्मठ, मेहनती और बहादुर क्रान्तिकारी थे। अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूँ तो 1908 में जार्जिया में वहाँ के लोगों से बदला लेने वाली फौजी टुकड़ी के कमाण्डर जनरल अजानचीयेव-अजानचेव्स्की का गोली मारकर उन्होंने खात्मा किया था।

''कामो'' का नाम सबसे पहले मुझे अराबिद्ज़े ने ही बताया था। क्रान्तिकारी तरकीबों इस्तेमाल करने में माहिर और ग़ज़ब के साहसी इस मज़दूर के सम्बन्ध में कुछ कहानियाँ भी उन्होंने मुझे बतायी थीं।

ये कहानियाँ इतनी अद्भुत, अविश्वसनीय और कल्पनातीत थीं कि उन वीरतापूर्ण दिनों में भी उन पर विश्वास करना कठिन था। इस बात पर विश्वास करना कठिन लगता था कि कोई आदमी उनके जैसा ज़बर्दस्त साहस दिखाने के साथ-साथ अपने काम में निरन्तर सफल होता जाता था, और साथ ही उसका दिल बच्चों जैसा सीधा-सादा भी हो औरे उसके अन्दर इतनी ज़बरदत सूझ-बूझ भी हो सकती थी। उस समय मुझे लगा कि उनके बारे में जो सब चीजें मैंने सुनी थीं अगर मैं उन्हें लिख डालूँगा तो कोई विश्वास नहीं करेगा। कोई मानेगा नहीं कि वास्तव में हाड़-मांस का कोई व्यक्ति ऐसा हो सकता है। मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया ''कामो'' का चित्र एक उपन्यासकार की मात्र कल्पना समझा जायेगा। इसलिए, अराबिद्ज़े ने जो कुछ भी मुझे बताया था लगभग उस सबको मैंने अराबिद्ज़े का क्रान्तिकारी रूमानीपन मान लिया था।

किन्तु, जैसाकि बहुत बार होता है, असलियत किसी भी ''कल्पना'' से अधिक जटिल तथा विस्मयकारी साबित हुई।

बहुत दिन बीतने से पहले ही ''कामो'' के सम्बन्ध में इन कहानियों की पुष्टि एन.एन. फ्लेरोव नामक एक व्यक्ति ने की जिससे मेरी मुलाक़ात बहुत पहले, 1892 में तिफलिस में हुई थी। उस समय वह, 'काउकाज' नामक अख़बार में प्रूफ-रीडर की हैसियत से काम करता था। उन दिनों वह ''जनतावादी'' था और जिलावतनी की मियाद पूरी करके तभी साइबेरिया से लौटा था। वह एक बहुत थका-माँदा इन्सान था, किन्तु मार्क्स का उसने गहराई से अध्ययन किया था और मुझे तथा मेरे साथी अफनासियेव को बहुत ही ओजस्विता के साथ वह यह समझाने की चेष्टा करता था कि ''इतिहास हमारे पक्ष में काम कर रहा है।''

अनेक थके लोगों की तरह वह भी क्रान्ति की अपेक्षा क्रमिक विकास की प्रक्रिया को अधिक पसन्द करता था।

परन्तु 1905 में वह मास्को आ पहुँचा था और तब वह एक बिल्कुल

बदला हुआ इन्सान था। सूखी खाँसी खाँसते हुए और उस आदमी की जैसी सावधानी भरी आवाज़ में जिसके फेफड़ों को टी.बी. खाये जा रहा था, उसने कहा :

"अरे, इस देश में एक सामाजिक इन्क़लाब का श्रीगणेश हो रहा है। क्या तुम लोग इसे समझते हो? हाँ, और यह इन्क़लाब सचमुच होने जा रहा है, क्योंकि इसकी शुरुआत नीचे से, धरती के अन्दर से हुई है।"

यह देखकर अच्छा लगता था कि एक संकुचित तर्कवादी की अदूरदर्शिता को उसने तिलांजलि दे दी थी। उसकी आवाज़ में इतना जोश सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। फिर वह बोला,

"और, देखो तो, मज़दूर वर्ग के अन्दर से कैसे-कैसे विलक्षण क्रान्तिकारी पैदा हो रहे हैं! जरा इसे सुनो!"

उसने किसी एक अद्‌भुत व्यक्ति के सम्बन्ध में बातें बतानी शुरू कर दीं। कुछ देर सुनने के बाद मैंने पूछा, "उसका नाम क्या 'कामो' है?"

"अच्छा, तो तुम उसे जानते हो? इधर-उधर कुछ सुना होगा...।"

उसने अपने चौड़े माथे और गंजी होती जाती खोपड़ी के बचे-खुचे सफेद बालों के ऊपर हाथ फेरा, कुछ देर तक सोचता रहा, और फिर कुछ इस तरह बोलने लगा जिससे कि मुझे तेरह साल पहले के उसके तर्कवादी रूप की याद आ गयी।

"जब लोग किसी व्यक्ति के बारे में बहुत बात करते हैं तब उसका मतलब होता है कि वह कोई असाधारण प्राणी है। और, शायद उसका यह भी अर्थ होता है कि 'एक गौरैया के आ जाने से गर्मी का मौसम शुरू नहीं हो जाता।"

परन्तु, इस अपवाद के साथ अतीत काल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, उसने उन सब चीज़ों की पुष्टि की जो अराबिद्‌जे ने हमें बतायी थीं। और फिर स्वयं अपनी तरफ से भी मुझे यह कहानी उसने कह सुनायी।

●

बाकू के रेलवे स्टेशन पर, जहाँ फ्लेरोव अपने किसी परिचित से मिलने गया था, एक मज़दूर ने उसे बहुत जोर से धक्का दिया। फिर

आहिस्ता से उसने उससे कहा :

"अब आप कृपा कर मुझे डाँटिये, गालियाँ दीजिये!"

फ्लेरोव को लगा कि उसे डाँटने और गाली देने की वास्तव में अच्छी-खासी वजह मौजूद थी। उसने उसकी इच्छा की अच्छी तरह पूर्ति की। मज़दूर अपनी टोपी हाथ में लिये क्षमा याचना करने के अंदाज में उसके सामने खड़ा था और धीरे-धीरे फुसफुसाता हुआ उससे कहने लगा :

"मैं आपको जानता हूँ। आपका नाम फ्लेरोव है। मेरा पीछा किया जा रहा है। जल्दी ही यहाँ एक दूसरा आदमी आयेगा। उसके गले पर पट्टी बँधी होगी और वह चारखाने का ओवरकोट पहने होगा। उससे कह दीजियेगा कि वह सुरक्षित घर अब सुरक्षित नहीं है – वहाँ उसे पकड़ने के लिए लोग घात लगाये बैठे हैं। उसे आप अपने साथ अपने घर ले जाइयेगा। समझ गये न?"

उसके बाद टोपी को अपने सिर पर ठीक से रखते हुए उस मज़दूर ने खुद जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया, "तुम्हारी बकवास बहुत हो चुकी! ऐसी कौन-सी मुसीबत आ गयी है? क्या मैंने तुम्हारी कोई हड्डी-पसली तोड़ दी है? – इतना हल्ला क्यों मचा रहे हो?"

फ्लेरोव हँसने लगा। फिर बोला,

"बढ़िया एक्टिंग थी ना? उसके बाद बहुत दिनों तक मैं सोचता रहा कि उसकी बातों पर मुझे शक क्यों नहीं हुआ, उसके आदेश को इतनी आसानी से क्यों मैंने मान लिया। कदाचित जिस अधिकार के साथ उसने मुझसे बात की थी उससे मैं प्रभावित हो गया था। कोई उकसाने वाला अथवा सरकारी जासूस होता तो वह मुझसे विनम्रता के साथ बात करता, उसमें इतनी हिम्मत न होती कि मुझे हुक्म दे। उसके बाद दो या तीन बार उससे फिर मेरी मुलाक़ात हुई थी और एक बार वह रात भर मेरे घर रहा था। उस रात हमने लम्बी बातचीत की थी। सैद्धान्तिक रूप में उसे बहुत ज्ञान नहीं है। वह इस बात को जानता है और इसके लिए बहुत शर्मिन्दा भी है, किन्तु पढ़ने और अपने को शिक्षित करने के लिए उसके पास बिल्कुल वक्त नहीं है। और, दरअसल तो, इसकी उसे ज़रूरत भी नहीं

हैं उसका अन्तरतम तक, उसकी एक-एक भावना, क्रान्तिकारी है। उसे कभी कोई डिगा नहीं सकता। क्रान्तिकारी काम करना उसके लिए उसी तरह की एक शारीरिक आवश्यकता है जिस तरह कि इन्सान के लिए हवा और रोटी की आवश्यकता होती है।''

दो साल बाद कैप्री द्वीप पर ''कामो'' के कार्यकलापों की एक और झलक मुझे लियोनिद क्रासीन के द्वारा मिली थी। हम लोग भिन्न-भिन्न पुराने साथियों की याद कर रहे थे। तभी अचानक वह हल्के से हँसे और पूछने लगे, 'आपको याद है कि जिस समय उस तेज-तर्रार काकेशियाई अफसर को सड़क पर आँख मारकर मैंने इशारा किया था तो आपको कितना आश्चर्य हुआ था? आपने आश्चर्य से पूछा था, कौन है वह मैंने आपको बातया था कि वह राजकुमार दादेश केलियानी, तिफलिस का मेरा एक परिचित मित्र था। याद आया? मुझे यक़ीन था कि आपने मेरी बात का विश्वास नहीं किया था। आपने सोचा होगा कि भला ऐसे छैल-छबीले आदमी से मेरी कैसे यारी हो सकती है। आपको शक हुआ होगा कि मैं आपको बना रहा था। वास्तव में वह 'कामो' था। अपनी भूमिका को कितनी ख़ूबसूरती से उसने निभाया था। अब वह बर्लिन में पकड़ लिया गया है। और सम्भवत: इस बार अब वह न बच पायेगा। वह पागल हो गया है। आपसे मैं कह सकता हूँ कि पागल-वागल कुछ नहीं है। परन्तु मुझे नहीं लगता कि इसे वह बच पायेगा। रूसी राजदूतावास चाहता है कि वह उसे सौंप दिया जाये। यदि जो-जो काम 'कामो' ने किये हैं उनके आधे-चौथाई का भी पता सैनिकों को लग जाये तो वे उसे सूली पर चढ़ा देंगे।''

'कामो' के बारे में मुझे जितनी भी जानकारी थी कि वह सब मैंने क्रासीन को सुना दी और उनसे पूछा कि उसमें कौन-कौन-सी चीजें सत्य हैं?

क्षणभर विचार करने के बाद क्रासीन ने कहा, ''यह सभी चीजें सच हो सकती हैं। मैंने भी उसकी विलक्षण सूझ-बूझ तथा हिम्मत की इन कहानियों को सुना है। निस्सन्देह, यह सम्भव है कि स्वयं अपने एक नायक की सृष्टि करने के लिए 'कामो' की अद्‌भुत सफलताओं तथा

कारगुजारियों की कहानी को मज़दूर थोड़ा-बहुत रंग चुनकर पेश कर रहे हों, वर्ग चेतना को धार देने के लिए वे एक क्रान्तिकारी गाथा गढ़ रहे हों। परन्तु, वास्तव में, वह असाधारण तौर से एक मौलिक व्यक्ति है, नये ढंग का व्यक्ति है। कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि सफलता ने उसे बिगाड़ दिया है और वह थोड़ा-बहुत नाटक भी करता है। परन्तु यह केवल नौजवानी की दुस्साहसिकता, केवल दिखावा और रूमानीपन नहीं है। यह किसी और चीज़ से पैदा होता है। बेवकूफ़ की भूमिका वह बहुत संजीदगी के साथ अदा करता है, किन्तु लगता है जैसे कि उसे वह, यथार्थ की दुनिया की चिन्ता किये बिना, किसी सपने के संसार में अदा कर रहा है।

उदाहरण के लिए, इसी घटना को ले लीजिए! अपनी गिरफ़्तारी से कुछ ही समय पहले बर्लिन में वह एक साथिन के साथ, एक रूसी युवती के साथ सड़क पर जा रहा था। युवती ने एक नागरिक के मकान की खिड़की पर बैठे बिल्ली के बच्चे की ओर संकेत किया और कहा, 'देखो तो, वह कितना प्यारा लग रहा है।' कामो ने एक ऊँची छलांग मारी, खिड़की पर से बिल्ली के उस बच्चे को उठा लाया और अपनी साथिन को उसे भेंट देते हुए बोला – 'लो! इसे ले लो!'

''लड़की को जर्मनों के सन्देह को यह कहकर दूर करना पड़ा था कि बिल्ली का वह बच्चा खुद ही खिड़की से कूदकर उसके पास आ गया था।...

''किन्तु इस तरह की यह कोई अकेली कहानी नहीं है। मेरा कहना यह है कि 'कामो' के अन्दर सम्पत्ति की जरा भी भावना नहीं है। उसके मुँह पर अक्सर यह बात रहती है, लीजिये, कृपया इसे स्वीकार कीजिए।' – चाहे प्रश्न स्वयं उसकी कमीज़ का हो, चाहे जूतों का, चाहे वैसी ही किसी दूसरी व्यक्तिगत चीज़ का।

''क्या ऐसा वह केवल दयाभाव से करता है? नहीं। वह बहुत बढ़िया साथी है। वह मेरी और तेरी में कोई फर्क नहीं करता। वह हमेशा 'हमारे दल', 'हमारी पार्टी', 'हमारे लक्ष्य' की ही बात करता है।''

''और बर्लिन में ही एक और भी घटना घटी थी। बेहद भीड़ वाली

एक गली में एक दूकानदार ने एक लड़के को अपने दरवाजे से धकियाकर बाहर कर दिया था। 'कामो' दौड़ता हुआ सीधे दुकान में घुस गया। उसका घबड़ाया हुआ साथी उसे रोक न पाया। उससे अपने को छुड़ाते हुए उसने कहा, 'जाने दो, मुझे जाने दो। उसकी थोड़ी मरम्मत करना ज़रूरी है।' कदाचित पागल आदमी के अपने पार्ट का वह पूर्वाभ्यास कर रहा था। किन्तु मुझे इसमें शक है। उन दिनों हम उसे अकेला बाहर नहीं जाने देते थे, क्योंकि यह निश्चित था कि अगर वह बाहर जायेगा तो किसी न किसी झंझट में जरूर फँस जायेगा।

"उसने मुझसे एक बार खुद ही यह बताया था कि एक बार जब वे लोग किसी को बेदखल करने गये थे और बम फेंकने की जिम्मेदारी उसके ऊपर थी तो उसे लगा था कि दो जासूस उसका पीछा कर रहे हैं। सिर्फ एक मिनट बाकी था। इसलिए वह सीधा जासूसों के सामने जा पहुँचा और उनसे उसने कहा, 'यहाँ से भाग जाओ, मैं बम फेंकने वाला हूँ।"

मैंने पूछा, 'और वे वहाँ से भाग गये?'

"एकदम, वे वहाँ से खिसक गये।"

"लेकिन तुमने उन्हें क्यों बताया?"

"क्यों नहीं? मैंने सोचा कि उनको बता देना ही बेहतर है, इसलिए मैंने बता दिया।"

"परन्तु, असली कारण क्या था?

क्या तुम्हें उनके लिए दुख हो रहा था?"

"इससे वह नाराज़ हो उठा और उसका चेहरा तमतमाने लगा। वह बोला, 'दुखी, बिल्कुल नहीं। लेकिन, वे साधारण ग़रीब लोग थे। उन्हें उससे क्या लेना-देना था? उनके वहाँ अटके रहने की ज़रूरत ही क्या थी? केवल मैं ही नहीं बम फेंक रहा था। उनके चोट लग जा सकती थी, या वे मर भी सकते थे।'

"एक और घटना है जो उसके इस तरह के आचरण पर कदाचित और अधिक प्रकाश डालती है। दिदुब में एक बार उसे लगा कि एक जासूस उसका पीछा कर रहा था। उसने उस आदमी को मज़बूती से

पकड़ लिया और उसे दीवाल के पास ले जाकर उससे उसने कहना शुरू कर दिया : 'तुम एक ग़रीब आदमी हो! हो ना? तब फिर तुम ग़रीबों के खिलाफ क्यों काम करते हो? क्या रईस लोग तुम्हारा साथ देते हैं? फिर तुम क्यों यह बदमाशी करते हो? चाहते हो कि मैं तुम्हारा काम तमाम कर दूँ?'

"उस आदमी ने कहा कि वह मरना नहीं चाहता था। वह बातूनी के दल का एक मज़दूर था। वह वहाँ क्रान्तिकारी साहित्य लेने के लिए आया था, किन्तु जिस साथी के साथ वह ठहरा करता था उसका पता उसने कहीं खो दिया था और इसीलिए याददाश्त के आधार पर वह उसके घर का पता लगाने के कोशिश कर रहा था। तो, देखा आपने, 'कामो' किस तरह का मौलिक इन्सान है?"

'कामो' का सबसे अद्‌भुत कार्य तो वह ढोंग रचना था जिसे उसने बर्लिन के उस सर्वज्ञ दिमागी डॉक्टर को भी बेवक़ूफ बना दिया था। किन्तु कामो की नकली बीमारी का ढोंग उसकी अधिक सहायता न कर सका। विल्हेल्म द्वितीय की सरकार ने उसे ज़ार के हथियारबन्द सिपाहियों के हवाले कर दिया। उसे ज़ंजीरों से बाँध दिया गया और तिफ़लिस ले जाकर मिखाइलोव्स्की अस्पताल के मानसिक चिकित्सा विभाग में रख दिया गया। अगर मैं भूल नहीं कर रहा हूँ तो उसने पागलपन का स्वांग पूरे तीन वर्ष तक किया था। अस्पताल से उसका भाग निकलना भी एक आश्चर्यजनक बहादुरी का काम था।"

व्यक्तिगत रूप से कामो से मेरी मुलाक़ात 1920 में, मास्को में फोरतूनतोवा के घर में हुई थी। वोज्दवीजेन्का और मोखोवाया मार्ग के कोने पर स्थित यह फ्लैट कभी मेरा रहा था।

वह एक गठे हुए शरीर का सुपुष्ट आदमी था। उसका चेहरा ठेठ काकेशियाई था और उसकी कोमल काली आँखों में नेकी और दृढ़ता का सदा चौकस रहने वाला जैसा भाव था। वह लाल सेना की वर्दी पहने था। उसकी गतिविधियों में एक विशेष प्रकार का संयम तथा सतर्कता थी जिससे ऐसा लगता था कि उस अनभ्यस्त वातावरण में वह कुछ परेशानी महसूस करता था। मैं तुरन्त समझ गया कि अपने क्रान्तिकारी काम के

बारे में पूछे जाने वाले सवालों का जवाब देते-देते वह थक गया था और अब उसका सारा ध्यान किसी और ही चीज़ में केन्द्रित था। वह श्रमिक अकादमी में प्रवेश पाने के लिए जमकर पढ़ाई कर रहा था।

एक पाठ्य-पुस्तक को इस तरह सहलाते और थपथपाते हुए जैसेकि वह किसी गुस्सैल कुत्ते को पुचकार रहा हो, किंचित निराश भाव से उसने कहा, "विज्ञान को समझना कठिन काम है। इसमें जितने चित्र होने चाहिए उतने नहीं हैं। पुस्तकों में और अधिक तस्वीरें होनी चाहिए जिससे कि आदमी फ़ौजों की स्थितियों को आसानी से समझ सके। इसके बारे में क्या आप मुझे कुछ बता सकते हैं?"

जब मैंने कहा कि मैं नहीं बता सकता तो मेरी बात सुनकर कामो किंकर्तव्यविमूढ़ ढंग से मुस्कुरा दिया।

"बात यह है कि...।"

उसकी मुस्कुराहट लगभग बच्चों जैसी, असहायतापूर्ण थी। उस तरह की असहायता की उस भावना से मैं अच्छी तरह परिचित था क्योंकि अपनी युवावस्था में, पुस्तकों के शाब्दिक ज्ञान से पाला पड़ने पर, मैं स्वयं उसका अनुभव कर चुका था। और मैं इस बात को भलीभाँति समझ सकता था कि मैदान में पराक्रम दिखाने वाले एक ऐसे निर्भीक आदमी के लिए जिसने क्रान्ति के दौरान मुख्य तौर से नये-नये अद्भुत कार्य करके उसमें योगदान किया था, पुस्तकों के इस अवरोध को पार करना कितना कठिन रहा होगा।

इसकी वजह से शुरू से ही 'कामो' के प्रति मेरे अन्दर गहरे लगाव का एक भाव पैदा हो गया था और जितना ही अधिक एक दूसरे को हम जानते गये, उसकी क्रान्तिकारी भावना की गहराई तथा सच्चाई से मैं उतना ही अधिक प्रभावित होता गया।

'कामो' के पौराणिक कहानी जैसे अद्भुत साहस, उसकी अतिमानवीय इच्छा-शक्ति तथा उसके आश्चर्यजनक आत्म-नियंत्रण के विषय में जिन बातों को मैं जानता था उन सबको इस आदमी के साथ, जो पाठ्य-पुस्तकों से लदी मेज़ के सामने इस समय मेरी क़रीब बैठा था, जोड़ सकना सर्वथा असम्भव-सा लगता था।

यह अविश्वसनीय लगता था कि इतने ज़बर्दस्त और लगातार कार्य के बाद भी उसका हृदय इतना कोमल और सरल बना हुआ था और उसका मन इतना जवान, निर्मल तथा मज़बूत था।

उसकी तरुणाई अभी तक समाप्त नहीं हुई थी और वह एक अत्यन्त आकर्षक, यद्यपि चौंधियाने वाली सुन्दर नहीं, स्त्री से रूमानी ढंग से प्रेम करता था। मेरा ख्याल है कि उम्र में वह स्त्री 'कामो' से बड़ी थी।

अपने प्रेम के विषय में उस गीतात्मक उत्कटता के साथ वह बात करता था जिसमें कि केवल पवित्र और शक्तिवान नौज़वान ही कर सकते हैं। वह कहता था :

"वह सचमुच असाधारण है! वह डाक्टर है और विज्ञान के विषय में सभी कुछ वह जानती है। काम के बाद जब वह घर वापस आती है तो मुझसे कहती है, 'इसमें ऐसी कौन-सी चीज़ है जो तुम नहीं समझ पाते? देखो, यह तो इतनी आसान है!' और उसकी बात बिल्कुल ठीक निकलती है। वह चीज़ बिल्कुल आसान निकलती है। वह एकदम सही सिद्ध होती है। वह भी क्या इन्सान है!"

और कभी-कभी अपनी प्रेमिका का ऐसे शब्दों में वर्णन करते-करते, जो सुनने में हास्यास्पद लगते थे, वह एक अप्रत्याशित खामोशी में डूबकर रुक जाता था, अपने घने घुँघराले बालों को पकड़कर बिखरा देता था और होंठों पर एक मौन-सा प्रश्न लिए हुए मेरी तरफ देखने लगता था।

उसे उत्साहित करता हुआ तब मैं पूछता, "हाँ, फिर इसके बाद क्या...?"

स्पष्ट, स्फुट स्वर में वह कहता, "देखिये, बात यह है कि...।" वह फिर चुप हो जाता और बोलने के लिए उसे तैयार करने के वास्ते मुझे फिर बहुत देर तक कोशिश करनी पड़ती और तब मुझे उसका वह अत्यन्त निश्छल प्रश्न सुनने को मिलता :

"शायद, मुझे शादी नहीं करनी चाहिए?"

"क्यों नहीं?"

"बात यह है कि, आप तो जानते हैं, क्रान्ति का दौर चल रहा है।

मुझे बहुत पढ़ना और काम करना है। हम लोग दुश्मनों से घिरे हैं। हमें उनसे जूझना है!''

और उसकी सिकुड़ी भौहें तथा उसकी आँखों में चमकती दृढ़ रोशनी को देखकर मैं समझ जाता कि इस प्रश्न को लेकर वास्तव में वह बहुत परेशान था। शादी करना – क्या क्रान्ति के साथ विश्वासघात करना नहीं होगा? तरुणाईभरी उसकी शक्तिशीलता और उसके पौरुष का अम्लान तेज, उसकी जबरदस्त क्रान्तिकारी कर्म शक्ति से मेल नहीं खा पाते थे। उस स्थित को देखकर बहुत विचित्र, थोड़ा मज़ाकिया तक लगता था, और दिल को बहुत चोट पहुँचती थी।

जितने ही उत्साह से वह अपने प्रेम के बारे में बात करता था उतने ही उत्कट आवेग से वह देश से बाहर जाकर वहाँ काम करने के बारे में चर्चा करता था। एक दिन कहने लगा, ''मैंने लेनिन से इज़ाज़त माँगी है कि वह मुझे बाहर चला जाने दें। मैंने उनसे कहा है कि, 'मैं वहाँ उपयोगी सिद्ध होउँगा।' वह कहते हैं, 'नहीं, अब तुमको पढ़ना है!' सो, बात खत्म हो गयी है। वह सब कुछ जानते हैं! वाह, क्या आदमी हैं! बच्चे की तरह हँसते हैं। आपने कभी उन्हें हँसते सुना है?''

उसके चेहरे पर मुस्कुराहट की चमक दौड़ गयी। फिर ज्योंही उसने सैन्य-विज्ञान के अध्ययन की कठिनाइयों की शिकायत करनी शुरू की त्योंही फिर उसके चेहरे पर परेशानी के बादल घिर आये।

जब मैंने उसके अतीत के बारे में पूछा तो अनिच्छा से उसने उन तमाम अद्‌भुत कहानियों की पुष्टि की जो मैंने उसके बारे में सुन रखी थीं। लेकिन इस सबके बारे में बात करना उसे पसन्द न था। और ऐसी कोई नयी बात उसने नहीं बतायी जो मुझे पहले से ही नहीं मालूम थी।

एक दिन वह कहने लगा, ''बहुत से मूर्खतापूर्ण कार्य भी मैंने किये हैं। एक दिन शराब पिलाकर एक पुलिस वाले को मैंने मदहोश कर दिया और फिर उसकी खोपड़ी और दाढ़ी को कोलतार से रंग दिया। हम लोग एक दूसरे से परिचित थे, सो वह मुझसे पूछने लगा, 'कल उस टोकरी में तुम क्या ले जा रहे थे?' मैंने कहा, 'अण्डे।' 'और उनके नीचे काग़ज़ कौन-से थे? – 'काग़ज़-वागज कोई नहीं थे!' वह बोला, 'तुम झूठ बोल

रहे हो। काग़ज़ों को मैंने खुद देखा था!' 'तो फिर तुमने मेरी तलाशी क्यों नहीं ली?' वह बोला, 'मैं उस समय स्नान करके लौट रहा था।' मूर्ख कहीं का! उसने मुझे झूठ बोलने के लिए विवश किया था इसलिए मैं उससे नाराज़ था। इसीलिए मैं उसे एक सराय में ले गया। शराब पीकर वह ज्योंही धुत्त हुआ, त्योंही कोलतार से मैंने उसकी अच्छी तरह पोताई कर दी। उन दिनों मैं नौजवान था, लोगों को बेवक़ूफ बनाने में मुझे मजा आता था।'' इसके बाद उसने इस तरह मुँह बनाया, जैसेकि कोई खट्टी चीज़ उसके मुँह में चली गयी थी।

मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि वह अपने संस्मरण लिख डाले। मैंने कहा कि उन तरुणों के लिए उसके संस्मरण उपयोगी होंगे जो क्रान्तिकारी तकनीकों को जानते नहीं हैं। उसने घुँघराले बालों वाले अपने सर को हिलाया और बहुत दिनों तक उसके लिए राजी नहीं हुआ। कहने लगा, ''मैं नहीं लिख सकता। मैं जानता ही नहीं कि कैसे लिखा जाये। मेरे जैसा एक असभ्य आदमी भला सोचिये तो, मैं किस तरह का लेखक बनूँगा।''

किन्तु, जब वह समझ गया कि उसके संस्मरण क्रान्ति के लिए उपयोगी होंगे तब वह लिखने के लिए राजी हो गया। और फिर, हमेशा की तरह, जब एक बार उसने निर्णय कर लिया तब, निसन्देह, उसे पूरा करने में वह जुट गया।

उसका लिखना बहुत शुद्ध नहीं था और किसी क़दर नीरस भी था। स्पष्टतः अपने से ज्यादा वह अपने साथियों के बारे में बताने की कोशिश करता था। इस ओर जब मैंने उसका ध्यान दिलाया तो वह नाराज़ होने लगा। बोला,

''क्या आप चाहते हैं कि मैं खुद अपनी ही पूजा करूँ? मैं कोई पादरी नहीं हूँ।''

''पादरी लोग क्या खुद अपनी पूजा करते हैं?''

''हाँ, और क्या? नौजवान महिलाएँ खुद अपनी ही पूजा करती हैं – क्या यह सच नहीं हैं?''

लेकिन, इसके बाद, उसने अधिक सजीवता के साथ लिखना शुरू

कर दिया और अपने बारे में भी लिखने में नियंत्रण को कुछ कम किया।

अपने विशिष्ट ढंग से वह सुन्दर था, यद्यपि इसका अहसास आदमी को तुरन्त नहीं होता था।

मेरे सामने लाल सेना की वर्दी पहने हुए एक मज़बूत, फुर्तीला-सा व्यक्ति बैठा था; लेकिन कल्पना की आँखों से मैं देख रहा था कि उसके अन्दर एक मज़दूर छिपा था, अण्डों को पहुँचाने वाला एक फेरी वाला था, एक टैक्सी ड्राइवर था, एक छैला, राजकुमार दादेश केलियानी, हथकड़ियों-बेड़ियों से जकड़ा एक पागल, एक ऐसा पगला बैठा था जिसने विज्ञान के बड़े-बड़े पण्डितों को भी यह मानने के लिए मज़बूर कर दिया था कि वह सचमुच पागल था!

मुझे याद नहीं कि मैंने त्रियाद्जे का क्यों ज़िक्र कर दिया था। त्रियाद्जे के बायें हाथ में केवल तीन अँगुलियाँ थीं और कैप्री में वह मेरे साथ टिका था।

'कामो' ने तुरन्त कहा, "हाँ-हाँ, मैं उसे जानता हूँ – वह मेन्शेविक है!" और फिर किंचित क्रोध और तिरस्कार से वह बोला, "इन मेन्शेविकों को मैं नहीं समझ पाता। वे ऐसे क्यों होते हैं? वे काकेशस में, हमारी ही जैसी भूमि पर रहते हैं। पर्वतमालाएँ वहाँ भी आकाश तक ऊँची जाती हैं, नदियाँ सागर की ओर दौड़ती दिखायी देती हैं, अपनी सारी सम्पदा को लिये हुए चारों तरफ़ वहाँ राजे-रजवाड़े फैले हुए हैं और आम लोग ग़रीब हैं। फिर भी ये मेन्शेविक इतने कमजोर क्यों होते हैं? वे क्रान्ति क्यों नहीं चहाते?"

वह बहुत देर तक विस्तार और अधिकाधिक उत्साह के साथ बात करता रहा, किन्तु एक विचार था जिसे व्यक्त करने के लिए वह सही शब्द नहीं ढूँढ़ पा रहा था। गहरी साँस लेते हुए उसने अपनी बात को इन शब्दों के साथ समाप्त कर दिया,

"मेहनतकश लोगों के बहुत से दुश्मन हैं। उनमें सबसे ख़तरनाक वे हैं जो हमारी अपनी ही भाषा में झूठ बोल सकते हैं!"

स्वभाविक तौर से मैं इस चीज़ को समझने के लिए बहुत उत्सुक था

---

* मेन्शेविक – रूस में क्रान्तिकारियों का विरोधी गुट

कि इस आदमी ने, जो इतने "निर्दोष हृदय का" है, अनुभवी मनश्चिकित्सकों को किस तरह, किस शक्ति और क्षमता से, यह समझा दिया था कि वह वास्तव में पागल है।

परन्तु, स्पष्ट था कि इस विषय में उससे किसी का पूछताछ करना उसे अच्छा नहीं लगता था। उत्तर में वह कन्धे उचका देता और टाल-मटोल करने की कोशिश करता। कहता,

"इसके बारे में मैं क्या कह सकता हूँ? मेरे लिए वैसा करना ज़रूरी था! मैं अपनी चमड़ी बचा रहा था और सोचता था कि इससे क्रान्ति में सहायता मिलेगी।"...

और जब मैंने उससे कहा कि अपने जीवन के इस नाजुक समय के विषय में उसे अपने संस्मरणों में लिखना पड़ेगा और बहुत सोच-समझकर लिखना पड़ेगा और, हो सकता है कि, इस काम में मैं उसकी कुछ सहायता कर सकूँ, तभी केवल कुछ सोचता हुआ वह एकदम विचार-मग्न हो गया था। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और दोनों हाथों की अँगुलियों को जोर से मोड़कर उसने उन्हें एक मुक्के की तरह बना लिया। फिर धीरे-धीरे उसने कहना शुरू किया,

"मैं कह ही क्या सकता हूँ? वे मेरे शरीर को लगातार टटोलते रहते, मेरे घुटनों पर ठक-ठक करते, मुझे गुदगुदाते, और जाने किस-किस तरह से मेरी जाँच करने की कोशिश करते... किन्तु अपनी उँगलियों से वे मेरी आत्मा को तो टटोल नहीं सकते थे, टटोल सकते थे क्या? उन्होंने मुझसे कहा कि शीशे में अपना मुँह देखो और उसमें कैसा भयानक चेहरा मुझे दिखायी दिया! वह मेरा नहीं था। वह किसी ऐसे आदमी का था जिसका चेहरा बहुत पतला था, जिसके लम्बे बाल चिकट कर सूख गये थे और जिसकी आँखें जल रही थीं – वह किसी बदशक्ल शैतान का चेहरा था! भयानक चेहरा!

"मैंने अपनी खीसें निपोर दीं। मैं मन में सोचने लगा, हो सकता है, मैं सचमुच ही पागल हो गया हूँ। वह बहुत ही कष्टदायक क्षण था! लेकिन मैंने सोच लिया था कि मुझे कौन-सा सही काम करना चाहिए और शीशे पर मैंने थूक दिया! उन दोनों ने, बदमाशों के एक गिरोह की तरह, एक-दूसरे को आँख से इशारा किया। निस्सन्देह, मुझे लगा कि वह

चीज़ उन्हें अच्छी लगी थी – यह चीज़ कि एक आदमी खुद अपना ही चेहरा भूल गया था!''

क्षण भर खामोश रहने के बाद उसने फिर आहिस्ता से कहना शुरू किया,

''जिस चीज़ के बारे में मैं सचमुच बहुत देर तक सोचता रहा था वह यह थी कि उस शख़्स के सामने मैं टिका रह सकूँगा, या वास्तव में पागल ही हो जाउँगा? यह बहुत बुरी स्थिति थी, आप समझते हैं न? मैं खुद अपने ही ऊपर विश्वास नहीं कर पा रहा था? ऐसा लगता था कि मैं किसी पहाड़ी के ऊँचे क़गार पर लटका हुआ हूँ। मैं देख नहीं पा रहा था कि मैं किस चीज़ के सहारे लटका हुआ हूँ।''

थोड़ी देर चुपचाप रहने के बाद, वह मुस्कुराने लगा और बोला,

''इसमें कोई शक नहीं कि वे अपने काम में माहिर हैं, अपने विज्ञान को वे जानते हैं, किन्तु वे काकेशियाई लोगों को नहीं जानते! हो सकता है कि हर काकेशियाई उनको पागल ही मालूम पड़ता हो! और फिर, यह तो बोल्शेविक भी था! हाँ, इसके बारे में भी मेरे मन में विचार उठे थे। किसके मन में न उठते? मैंने मन ही मन तय किया कि चलो, खेल को चलने दो, और देखो कौन किसे पहले पागल बना देता है! मैं सफल नहीं हुआ। वे जैसे थे वैसे ही बने रहे, और मैं भी अपनी जगह पर अड़ा रहा। तिफलिस में उन्होंने मेरी अधिक जाँच-पड़ताल नहीं की। मेरा ख़्याल है कि उन्होंने सोचा होगा कि जर्मनों से कोई भूल नहीं हो सकती थी।''

उसने जितनी भी बातें मुझे बतायी थीं, उनमें यह सबसे लम्बी थी।

और, ऐसा लगता था कि, इस कहानी को बतलाना उसके लिए सबसे अधिक कष्टप्रद था। अनपेक्षित रूप से कुछ मिनटों के बाद फिर वह किसी विषय के सम्बन्ध में बात करने लगा। हम लोग पास-पास बैठे थे। उसने अपने कन्धे से मुझे हल्का-सा धक्का दिया और शान्त, किन्तु किंचित कठोर स्वर में बोला,

''रूसी भाषा में एक शब्द है – यारोस्त। आप इस शब्द को जानते हैं? इस यारोस्त का अर्थ क्या है – इसे मैं अभी नहीं समझ सका था। किन्तु, मेरा ख़्याल है कि, जिस समय मैं डॉक्टरों के सामने था उस समय मैं यारोस्त में ही था। आज मुझे ऐसा ही लगता है। यारोस्त ... वह एक

अच्छा शब्द है। क्या यह सच है कि एक रूसी देवता हुआ करता था जिसका नाम 'यारीलो' था?''

और जब उसे यह मालूम हुआ कि वास्तव में एक ऐसा देवता था और उसे सृजनात्मक शक्तियों का मूर्तमान स्वरूप माना जाता था, तो 'कामो' ठठाकर हँस पड़ा।

मेरी दृष्टि में 'कामो' उन क्रान्तिकारियों में से एक था जिनके लिए वर्तमान के मुक़ाबले भविष्य कहीं अधिक वास्तविक होता है। इसका अर्थ यह नहीं कि वे सपनों में जीते हैं। क़त्तई नहीं। इसका अर्थ यह होता है कि उनके दिल की, मन की क्रान्तिकारी भावना इतनी सामंजस्यपूर्ण और मज़बूत होती है कि उससे उनके विवेक को साहस मिलता है, उससे उनकी क्रान्तिकारी भावना को बढ़ने का और दूर-दूर तक छलाँगें लगाने का आधार प्राप्त होता है।

अपने क्रान्तिकारी कामकाज के बाहर वह पूरी सच्चाई, जिसमें उनके पूरे वर्ग को रहना पड़ता है, उन्हें एक भयानक सपने की तरह, एक भयानक मायाजाल की तरह लगती है, और जिस असली सच्चाई में वे ज़िन्दा रहते हैं वह होती है समाजवादी भविष्य की सच्चाई।